

वसुधाननामगीयासस्मृतासुचिन्नसुतर्नपुष्टद्वंद्वानिदइः खइजिर्नसमगननाधर्मां तांकल्पवृक्षसदोवसुधानम
हवृक्षनमामि शिन्नमाजगतादिताया ॥ नत्ताकनोनत्तातिधानकासां विविगुनत्तापुतिहासवर्षोनत्तावतानत्तनत्त
विशिष्टमाववर्षावसुधानधानी ॥ यानत्तधातिमरुत्तामवताययकिं न्यामवर्तसहस्रवनसद्वहन्ति ॥ हानां
विलिप्तकधुलहपिता श्रीमार्थानमामि वसुष्टुष्टुददोशनरम्भा ॥ १ ॥ चर्वमयाद्युतमकास्मिन्समभगता
कोट्यामदानगर्था विह्वनमिस्म ॥ कधुर्कर्मरुक्कमहावत्तदभयाधिनालार्भमहताहिकुसुधनसाधु

वे. ५५

२

मातेतिहसतेसम्यक्कलेद... आवकेनसखये... सर्ववृद्धगुहासमत्वा...
तस्यासतेपयेदिनेनवपानि... पुनःसुतःसर्वदात्रिदुव्याधि...
आदिकल्पानमध्वकल्पानपथ्यवसानकल्पानस्वर्थसु...
कालयतिस्म॥ तनखलपुनःसमयनकासाव्यमहानगयासुवे...
सानमानसावहपुगावहइहितभावहृत्पनिजनसम्यन्त्र...
तनखलपुनःसमयनरगव

नामसंकाकडपसंकेमरगावत... पादोभिजसाहिवचिन्वा...
नकाकनिमन्त्र... सवन्नामगृहपति...
वपुससव... रगावन्नवकासक...
वचनपुगि... रगावन्नभतदवाव...
व्याधितस्वर... अथखल...
गृहपतिमहदवाव...

५५

३

विदुतायाः पतिपुत्रीपृच्छसि॥ एवमुक्तं सद्यः गृहपतिर्गवत्तु मृतदवावत॥ दनिदाहेरुगवन्तदनिदाहेरुगता बह
पाधानपुत्रावदुर्दृष्टिर्कोवदुर्दृष्ट्यपनिर्गता संपन्न॥ तदेतद्यत्तु मृतगवान्धर्मपुत्राय अतदनिदसत्त्वा अदनिदा
रुवेयुः॥ याधितश्च सत्त्वा अयाधितारुवेयुः॥ बहूधनाधन्यकायकाष्टागलसम्पन्नाश्च रुवेयुधमसि सक्किवडा वेयुः॥
४॥ विविलापु बालजान नृप नजत समृद्धाश्च रुवेयुः॥ एतुमिहिलि गृहपुगदान कूट्वाश्च रुवेयुः॥ गृहपतितायो युम
दानक दानिका दासी दास कर्मकन पुसकजन सम्यन्त्र पतिवानाश्च रुवेयुः॥ एवमुक्तं रुगवत्सर्वसापनिपुने

कनसुखन्दुर्गृहपतिमृतदवावत॥ अस्मी गृहपतितुत पूर्वऽतीतं धन्यसंख्यय कल्पय्य दामा कनकालन नन सम
नरुगवान् श्रीवज्रधनसागनतिर्धायनामतथागतार्हक सम्यक् वृद्धारुगवान् न स्यतथागतस्या न्नि क मया गृह
तव सुधानननाम धनदी श्रुत्वा च उद्गृहीता धानिता वाविता दक्षिता पयवाफा अन्रभादिता पनत्य धविह
हा सम्युका शिता अहमं यतर्हितं कुलयुक्तं धनवीनं आराधियथा मस्या अभवध्माः पलावनकुल पुगमा दयानवि
हथयन्ति अमानुषानविह ० यन्ति देवानविह ० यन्ति नागानविह ० यन्ति यक्षानविह ० यन्ति असुरानविह ०

व. ५३
४

यन्निनाक्रमानविह ० यन्नि। रक्तानविह ० यन्नि। पित्तानविह ० यन्नि। कृष्णानविह ० यन्नि। श्वेतानविह ० यन्नि। अपमानविह ० यन्नि। मध्वानविह ० यन्नि। किन्ननविह ० यन्नि। महानगानविह ० यन्नि। श्वेतानविह ० यन्नि। कतपूतनानविह ० यन्नि। सर्वगुहानविह ० यन्नि॥ सर्वदवानविह ० यन्नि। कृत्तिपासानविह ० यन्नि। सर्वाहानविह ० यन्नि॥ उर्वयावत्युयाहाना। रुलाहाना। पगाहाना। लवाहाना। कृष्णाहाना। मृत्ताहाना। धाहाना। धूपहाना। दीपाहाना। माल्याहाना। आहृष्याहाना। नविह ० यन्नि। उ। आहानानविह ० यन्नि॥ स्वदाहानाः

त्रसाहाना। नकाहाना। मीसाहानाः। मदाहाना। अमदाहाना। मङ्गाहाना। नृधिनहाना। पुकाहाना। जीविताहानाः। सर्वदाविह ० यन्नि॥ उर्वविहाना। खस्याहानाः। सिहानकाहाना। रुदाहाना। किन्नाहाना। स्यन्नीकाहाना। वाकाहाना। १२। आहाना। उच्छिष्टाहाना। अन्विष्टाहानाः। नविह ० यन्नि॥ हास्याहाना। गरीहाहाना। सर्वदाविह ० यन्नि। सर्वदाकिन्पानविह ० यन्ति। कायानविह ० यन्निः। जातानविह ० यन्नि। लावनानविह ० यन्नि। नूपाहाना। दाहाना। गन्धाहाना। स्पर्शाहाना। आहृष्याहाना। नानानाहाना। विहपाहाना। अनकनूपाहाना। कामनूपाहाना। विवि

व ५
१

नृपाहनाऽवमुपासनाऽवल्याहनाऽमुसुव्याहनाऽविविध्याहनाऽवत्सव्याहनाऽनविहऽयन्ति ॥ यावत्तवचनाऽ
रुचनाऽअकनीरुचनाऽजलवनाऽसर्वानविहऽयन्ति ॥ ५ ॥ याममसर्वइष्टानां महावडो धमूध्रिस्तुल्यः ॥ ५ ॥
प्रहनद्याय ॥ ३ ॥ रुचवडोऽसर्वइष्टानां सर्वगतुर्धामानय ॥ ५ ॥ यय ॥ ५ ॥ यय ॥ ५ ॥ यय ॥ ५ ॥ यय ॥ ५ ॥
मानय ॥ ५ ॥ सर्वगतुर्धामानय ॥ ५ ॥ यय ॥ ५ ॥ यय ॥ ५ ॥ यय ॥ ५ ॥ यय ॥ ५ ॥ यय ॥ ५ ॥
लइहिनुवाहुयगता ॥ हस्तगता ॥ पूरुगता ॥ ५ ॥ गिता ॥ पय्येवाका ॥ मनसासपजिविकिता ॥ धानितावाविता ॥

ता ॥ अन्मादिता ॥ यनत्यविस्तने दामं पुकादिताव नद्विस्थिति ॥ तस्य कुलपुत्रस्य वा कुलइहिनुवादीर्घनाममर्थयहित
यस्य स्वाय ॥ ५ ॥ माय ॥ ५ ॥ सतिहाय ॥ योगसंज्ञानाम ॥ ५ ॥ विस्थिति ॥ ५ ॥ य ॥ ५ ॥ यमोवसुधानानामधानधीतथागतत्वा ॥ ५ ॥
सम्यक्वृद्धि ॥ उदानां पुजां कृतानामस्तुत्या आवर्त ॥ ५ ॥ सर्वतथागतानां सर्वथावकायत्थकवृद्धानां सर्वथाधिसत्त्वा
नां सर्वतथागतसर्वमुद्रामनुविधां देवतानां ॥ ५ ॥ सर्वपूजाति ॥ पूजाये ॥ ५ ॥ अर्द्धनां ॥ गितवृत्तानां ॥ गितस्य देवता ॥
नकपुमदिता ॥ ५ ॥ गीति सोमनस्यजातावावये ॥ ५ ॥ तदा ॥ ५ ॥ यय ॥ ५ ॥ यय ॥ ५ ॥ यय ॥ ५ ॥ यय ॥ ५ ॥ यय ॥ ५ ॥

ध ९
वती स्वाहा ॥ उं श्री धनं २ स्वाहा ॥ उं श्री धनं स्वयं स्वाहा ॥ उं श्री धीमती स्वाहा ॥ उं श्री पुतावमती स्वाहा ॥ उं श्री नून स्वाहा ॥ उं श्री सुनूपम
ल स्वाहा ॥ उं श्री ॥ अगतमल स्वाहा ॥ उं श्री धी विपुल गङ्गा स्वाहा ॥ उं श्री अक्षय मयी स्वाहा ॥ उं श्री अक्षय कीरत स्वाहा ॥ उं श्री धर्म र
म रूप स्वाहा ॥ उं श्री ॥ अक्षय प्रद स्वाहा ॥ उं श्री सर्व संग प्रद स्वाहा ॥ उं श्री धन द प्रकृत स्वाहा ॥ उं श्री पूजनी स्वाहा ॥ उं श्री अर्चनीय
स्वाहा ॥ उं श्री अर्च स्वाहा ॥ उं श्री चिनां सु स्वाहा ॥ उं श्री नन सु स्वाहा ॥ उं श्री विन सु स्वाहा ॥ उं श्री अन सु स्वाहा ॥ उं श्री विन सु स्वाहा ॥
उं धनन सु स्वाहा ॥ उं श्री विश्व सु स्वाहा ॥ उं श्री विश्व रूपा स्वाहा ॥ उं श्री विश्व शील स्वाहा ॥ उं श्री विश्व निधि स्वाहा ॥ उं श्री पुद्गल

शुभ
९

मम सर्व सुखादायक गुरु आकाश गत वा पृथ्वी गत वा अलगत वा रसुलगत वा अरुनीरुगती वा स्वर्ग गत वा मय गत वा
पाताल गत वा समुद्र गत वा सफदी पातन गत वा सर्व गत वा पर्वता गत वा हस्ति गत वा एगवति वरुणा गत वा
गुरु मनि मुक्ति वरुणा गत वा अविनाशाय नमः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

स्वाहा॥ॐ श्रीभक्तकृमतिस्वाहा॥ॐ श्रीगुह्यमतिस्वाहा॥ॐ श्रीमहात्मतिस्वाहा॥ॐ श्रीमहाधर्मतिस्वाहा॥ॐ श्रीपुण्यमतिस्वाहा॥ॐ
 श्रीरुद्रमतिस्वाहा॥ॐ श्रीजयमतिस्वाहा॥ॐ श्रीविजयमतिस्वाहा॥ॐ श्रीस्वच्छमतिस्वाहा॥ॐ श्रीगुर्विद्यासुविनयसु
 तनिमहाकृज श्रीस्वाहा॥ॐ श्रीमहासाकृमतिस्वाहा॥ॐ श्रीमतिस्वाहा॥ॐ श्रीसर्वतर्कजनवभक्तनीस्वाहा॥ॐ श्रीसर्वइष्टनि
 कृतिस्वाहा॥ॐ श्रीसर्वसकृविनासने॥ॐ रुद्रस्वाहा॥ॐ श्रीभाग्यभाग्यसमयमनस्मनस्वाहा॥ॐ श्रीरुद्रयमनस्म
 नस्वाहा॥ॐ श्रीउपद्रुयमनस्मनस्वाहा॥ॐ श्रीआवर्द्धमनस्मनस्वाहा॥ॐ श्रीअधनमनस्मनस्वाहा॥ॐ श्रीप्राणव

ननस्मनस्वाहा॥ॐ श्रीरुद्रावसन्मनस्वाहा॥ॐ श्रीमनस्मनस्वाहा॥ॐ श्रीजयमनस्मनस्वाहा॥ॐ सर्वतर्कसमाधमनस्म
 नस्वाहा॥ॐ श्रीमहाभाग्यमनस्मनस्वाहा॥ॐ श्रीवसुधमनस्वाहा॥ॐ श्रीवसुधस्वाहा॥ॐ श्रीवसुधनीध
 स्वाहा॥ॐ श्रीरुद्रमतिपुत्रस्वाहा॥ॐ श्रीवसुधननीधस्वाहा॥ॐ श्रीलक्ष्मीधस्वाहा॥ॐ श्रीलक्ष्मीनिवासनीधस्वाहा॥ॐ श्रीमहा
 लक्ष्मीरुद्रनिवासनीधस्वाहा॥ॐ श्रीवसुधस्वाहा॥ॐ श्रीधननीधनकनीधनकनीधनीधस्वाहा॥ॐ श्रीवसुधनीधस्वाहा॥ॐ
 ॐ श्रीमहाभाग्यमनस्मनस्वाहा॥ॐ श्रीधनकनीधनमनस्मनस्वाहा॥ॐ श्रीधनकनीधनमनस्मनस्वाहा॥ॐ श्रीवसुधनीध

व. धा.

१३

नह स्वाहा॥ उं ह्रन्दाय स्वाहा॥ उं पाविरकलाय स्वाहा॥ उं यमाय स्वाहा॥ उं वेभ्रमलाय स्वाहा॥ उं विन्धकाय उं विन्धकाय स्वा
 हा॥ उं धृक्नायाय स्वाहा॥ उं कुर्वलाय स्वाहा॥ उं अग्रय स्वाहा॥ उं नेत्राय स्वाहा॥ उं वासवे स्वाहा॥ उं ॐ भानाधिपतये स्वा
 हा॥ उं अर्जुनाय स्वाहा॥ उं कलिकाय स्वाहा॥ उं दासकीय स्वाहा॥ उं गीतपोलाय स्वाहा॥ उं तदुकाय स्वाहा॥ उं यज्ञाय स्वाहा॥
 उं अर्जुनागाधिपतये स्वाहा॥ उं ऊर्मलजलदाय स्वाहा॥ उं अस्नाधिपतये स्वाहा॥ उं सूर्याग्रहाधिपतये स्वाहा॥ उं चन्द्रा
 नकृशाधिपतये स्वाहा॥ उं दिलिलोकपालाय स्वाहा॥ उं विदिलिलोकपालाय स्वाहा॥ उं सर्वलोकपालाय स्वाहा॥ उं सर्वेश्व

उन्
१३

उं ऊर्मलमविन्दाय स्वाहा॥ उं ऊर्मलवर्नन्दाय स्वाहा॥ उं ऊर्मलजलदाय स्वाहा॥ उं श्रीऊर्मलसर्वजलदाय स्वाहा॥ उं ऊर्मल
 जलदाय स्वाहा॥ उं ॐ श्रीवपालाय स्वाहा॥ उं वसुधा स्वाहा॥ उं वसुधानदीय स्वाहा॥ उं श्रीहं स्वाहा॥ उं श्रीवसुधाम स्वाहा॥ उं श्री
 धीकनीधनकनीधान्यकनीध्यागङ्गाकङ्क्री स्वाहा॥ उं ॐ लादवीय स्वाहा॥ उं श्रीवलादवीय स्वाहा॥ उं श्रीवसुधामादवीय
 स्वाहा॥ उं श्रीधनवती स्वाहा॥ उं श्रीधान्यवतीय स्वाहा॥ उं श्रीमीमतीय स्वाहा॥ उं श्रीप्रणामतीय स्वाहा॥ उं श्रीप्रणामतीय स्वाहा॥
 उं चन्द्रमतीय स्वाहा॥ उं श्रीरुजमतीय स्वाहा॥ उं श्रीगुहवतीय स्वाहा॥ उं श्रीवसुधामि स्वाहा॥ उं श्रीवसु स्वाहा॥ उं श्रीवसु

पृ. ५१
१५

श्री

धनी स्वाहा ॥ उं ग म ल ग ल ज्ञाय स्वाहा ॥ उं हूं वूं स्वाहा ॥ उं श्री ग म अ कि अ क र्ष य र ग ॥ उं श्री ध न द म हा ध न दी स्वाहा ॥
उं श्री य म म हा य म को स्वाहा ॥ उं श्री वि वि कु पु ली के ली मा लि मा लि नी स्वाहा ॥ उं श्री पू र्ण स पू र्ण स्वाहा ॥ उं श्री म हा न त्र धि धा न
पात की स्वाहा ॥ उं स्वाहा ॥ उं स्वाहा ॥ उं स्वाहा ॥ उं स्वाहा ॥ उं स्वाहा ॥ उं स्वाहा ॥ उं स्वाहा ॥ उं स्वाहा ॥ उं स्वाहा ॥ उं
व द म मा ज ग ॥ उं वं ॥
आ रु स्वाहा ॥ उं श्री म म स र्व म न्व जी स र्व ध न ध न्य स र्व च नि धा न नि द दाय य स्वाहा ॥ उं ग म ल ग ल ज्ञाय स्वाहा ॥ उं वं ॥ उं वं ॥ उं वं ॥

हि द दाय य स्वाहा ॥ उं स्वाहा ॥ उं र व ॥ उं र व ॥ उं र व ॥ उं र व ॥ उं र व ॥ उं र व ॥ उं र व ॥ उं र व ॥ उं र व ॥ उं र व ॥ उं र व ॥ उं र व ॥ उं र व ॥ उं र व ॥ उं र व ॥ उं र व ॥ उं र व ॥ उं र व ॥
वि ह म न मा द रु ॥ उं म म न प द ॥ सि द्ध रु ॥ ॥ उं उं उं उं उं ॥ हूं हूं हूं हूं हूं ॥ उं उं उं उं उं ॥ उं उं उं उं उं ॥ उं उं उं उं उं ॥ उं उं उं उं उं ॥ उं उं उं उं उं ॥ उं उं उं उं उं ॥ उं उं उं उं उं ॥
द दाय य स्वाहा ॥ उं वं ॥ उं वं ॥ उं वं ॥ उं वं ॥ उं वं ॥ उं वं ॥ उं वं ॥ उं वं ॥ उं वं ॥ उं वं ॥ उं वं ॥ उं वं ॥ उं वं ॥ उं वं ॥ उं वं ॥ उं वं ॥ उं वं ॥ उं वं ॥ उं वं ॥
प्र मा नी म हा हा ग द द ति ॥ उं पि त म ना न थ प नि पू न य नि ॥ उं वं ॥ उं वं ॥ उं वं ॥ उं वं ॥ उं वं ॥ उं वं ॥ उं वं ॥ उं वं ॥ उं वं ॥ उं वं ॥ उं वं ॥ उं वं ॥ उं वं ॥ उं वं ॥ उं वं ॥ उं वं ॥ उं वं ॥
न क नी धा न्य क नी आ ग च आ ग च वी स्वाहा ॥ उं श्री नि धा ना य स्वाहा ॥ उं प म नि धा ना य स्वाहा ॥ उं श्री म हा य धी स र्व पू ज

है स्वाहा ॥ आन्यास च काम इहान कामयनि ॥ तान् वीनीपि लानिपनि पूजयति ॥ सिद्धिं मुक्तापदा नि ॥ कथथा ॥ है नमानुज
कथाय ॥ है नमः देवी धन इहि न वसुधा न वसुधा नापाकय रधन रधन नत्त देह रुं कन रधन रधन निनत्त म द हि द दाय य न
त्त साग न महानि ध्रिकाटी भग सह सुपनिवान ॥ उध्द हिलग वगि वसुधा न पु विध्य म म धर्न म म रुग व न महानि धाने या
तय यु न र रु रु रु के ला सनी वासि ति स्वाहा ॥ ॐ य मा गुरु प्र न व स ध नाना म धान ही म नु प दा ॥ ॐ स्वा धे न एष ॥ ३ पु रा व
न भाग इ ति मे को द या न पु रु व ति ॥ य मु क ल पू ग ॥ ॐ मा नि व स ध नाना म धान ही म नु प दा ति ॥ क था ग ना ना म रु ता स म्य

[illegible]

व. ५५
१९

पादोलिनसाहिवन्द्यरुगवक्तुममदवावतु॥ कारुगवहेदुष्टकः प्रत्यथायनसुवन्दानामगृहपतिमहाप्रतामहा
गामहाकायकीशगामनवनधन्यदिनधमेव सुनन्तजातः॥ ॥ तगावानाह॥ शुद्धाश्चानन्दसुवन्दानामगृहपतिध्यान
मशुद्धः कल्याणभयधानितावतुमेयवसुधानानामधनधीप्रवर्हिता॥ इहहीताधनितावाचितापयेवाप्याचु
मादितापनयधुविक्रनधसंपुकासिता॥ तनाकामानन्दतमधुद्धीधवमावसुधानानामधनधीधनयदाव
यदेभयप्रहयपयवाप्राहियनयधुविक्रनधसंपुकाभयतलेहदिव्यति॥ यद्धजनहितायवद्धजनसुखाय

नूकम्यायेशमहताजनकायस्थायहितायसुखायदेवानाचमनुष्यानाचर्यस्यगृहपतनानन्दः यवसुधानानाम
धनधीहसुगताहविष्यति॥ इतगाताधनिताचिहिताप्रतिमाजा॥ गृहगतापूजितावुहविष्यति॥ तस्यइतिहसुयंत
विष्यतिकेभनवितववाकस्यसर्वदेतेवद्धजनहितायवद्धजनसुखायलोकानूकम्यायेशमहताजनकायस्थायहिता
यसुखायदेवानाचमनुष्यानाचरनाहमानन्दधर्मसमनुष्यामिसुदेवकेकाकेसमानके॥ सुवसुकेसमुमहवो
हि कायापजायी॥ सदवासुनमानुषाय॥ यन्माविशोमन्यथाकनिष्यति॥ इतिइतिविष्यतिवा॥ नितस्त्वनविषयता॥

व. ५५
२७

तत्कस्य हता ॥ न ह्यन्यानि श्रुता आनन्दवसुधानामधानधीमनुपदानिनश्च नातिहीनकुशलमूलानीयुः विषय
मागमिष्यति ॥ पुनर्वादाय प्रकृतगता निरुदयगता निधनयिष्यति । तत्कस्य हता सर्वतथागतानामनुद्धावः सर्वत
थागतैः त्रियंताधिना धानधी अदि हितता धानिता स्वमुद्रया मुद्रिका प्रकाशिता अनुभादिता प्रकाशिता पुस्तकादिता
संप्रवर्तिता विवृता उक्ता निरुता अनानिता ॥ आख्यातादिनिगानातन्नाना सर्वव्याधिपनिपीठितानां च सर्वे इह
सत्वरुपा पदतानां यथेहिताय सवाय सहीतापनितामायश्च माययति ॥ ॥ आनन्दभाह ॥ उद्धृतामनुगाव

गु
२७

त्रियं वसुधानामधानधी ॥ धानिता वा विता पुण्यवापा अनुभादिता मनसा मपवनि विनिता गावलाधरुगावनि
ति ॥ अथ वल आध्याना नन्द उच्छया मना दका समुत्तना संगकृता इति धानमधुर्लपृथिव्यां पुनित्वा पयं
रुगावोक्तना अलिपुष्टाम्पकृतकमुद्रा हत्वा ॥ रुगावन्मन्त्रमवलोक्य यदि दानित्वा विस्मयामि माता आशुताय
त ॥ ॥ अचिक्रमादव्यसमुद्धयसदा अनकनलससमुद्धयकावर्त्त ॥ आपूनर्धमस्मिन्नुहयमधुर्ल ॥ नमभुर्ल
वसुधानधी सदा ॥ अचिक्रमा रुगावान्बुद्धावुद्धधर्मयचिक्रमा ॥ अचिक्रमं हि प्रसन्नानां विपाकशायचिक्रमा

६ अ
२१

साक्षात्तानियसर्वधर्मिनामपनंपताफानगामिरुलीयाकवृहीनंनमानुसं॥ अथवल्लभायप्यानानदीया
नियसकृतकनपुंअहगवकमतद्वीयग॥ उरुहीनामहगवविचयवसुधनाधमधनधीप्रकांकताक्षनिशावादि
तापुर्ववाफानसादितामनमासुप्रनिविन्निपनलपुर्विसनल॥ दानिगहसपुदामयिष्यामीति॥ अथकद्व
माहृदावसुधनासुवदुगृहपातेरपानिपुकीगकीसाभनोह॥ ॥ अथवल्लभसुवदुनामगृहपतिगमन
नमनकमनसुमुपदकि॥ लोकयहगवकपादात्तनमासिबंशरगवकपुननवलोक्षरगमनोऽनिकाहृष्ट

पुवमि॥ एकभवमविपु॥ धिनिहृष्टाविस्मगाहृष्टउष्टदगुआमना॥ पुनादित॥ धीतां॥ मरुकापान॥ यत्रिपु
थापविद्यमनाना॥ कभलभलाम॥ इ॥ लि॥ च॥ हृदयावृद्धरगवविचयसुधनधमवम॥ वप्रमगुन॥ मे॥ न॥ पुतदि
नप्रि॥ शी॥ काने॥ वचि॥ रं॥ सम॥ सा॥ दय॥ क्रि॥ सा॥ ॥ अथवल्लभगवनायप्यानमानुसं॥ गच्छवसानदी
सुगृहपतागामनप्रमपनिपु॥ ॥ सदैधनधायसगृहमेधनलंभवसुवृहृतापकनरहोवमकाका॥
नातिवा॥ निपु॥ नि॥ ॥ ॥ मे॥ ध॥ मय॥ वाय॥ रु॥ ग॥ वि॥ गा॥ ॥ रि॥ का॥ वृ॥ ला॥ हृ॥ द॥ स॥ उ॥ द॥ ग॥ आ॥ म॥ ना॥ पु॥ म॥ दि॥ न॥ ॥ ॥ मि॥ ह॥ र्ण॥ ॥
संम्यग॥ १०८॥ ००॥ मि॥ शी॥ व॥ ह॥ ध॥ न॥ लि॥ क॥ ल्य॥ स॥ मा॥ फि॥ ॥ ॥ अ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

धर्मरत्न बज्राचार्य सुरत श्री महाबिहार

DM 281.

बसु धरा कल्य

वसुधारा नाम ध्यानी